षट्पञ्चाशिका

विश्वदीप दत्ता

विवाह के प्रश्न का विचार : P 96 पृथुयशा

यदि कोई लड़का प्रश्न करे और प्रश्न लग्न से सम स्थानों में शनि हो तो कन्या मिल जाएगी अर्थात् विवाह हो जाएगा।

इसी प्रकार प्रश्न लग्न से विषम स्थानों में शनि हो और कन्या प्रश्न करने वाली हो पुरूष अर्थात् वर मिल जाएगा। ऐसा कहना चाहिए।

इस विषय में अन्य योग इस प्रकार हैं।

(i) 2,3,10,6,11,7 भावों में चन्द्रमा यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो जातक का शीघ्र ही विवाह होता है। यदि उक्त चन्द्रमा अन्य भावों में गया हो तो स्त्री लाभ नहीं होता है।

(ii) यदि गुरू, शुक्र, बुध, चन्द्रमा त्रिकोण केन्द्र में हो तो विवाह कारक होते हैं –

(iii) प्रश्न लग्न से 3,5,6,7,11 भावों में चन्द्रमा यदि सूर्य, बृहस्पति, बुध से दृष्ट हो या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तो विवाह प्रद होते हैं –

(iv) यदि प्रश्न लग्न में कर्क, तुला, बृष राशि हो और वहीं पर शुभ दृष्ट चन्द्रमा हो तो कन्या लाभ होता है

इसी प्रकार स्त्री ग्रह शुक्र, चन्द्र सम राशियों में हों और सप्तम राशि नवांश को देखें और लग्न में हो तो स्त्री का लाभ होता है।

प्रेमिका से विवाह योग : P 97

पं० राम दयालु ने संकेत निधि में प्रेमिका से विवाह होगा या नहीं?

इस विषय में चार योग बताए हैं-

(i) 3,6,7,10,11 भावों में चन्द्रमा शुभ ग्रह की राशि में सूर्य, बुध, गुरू से दृष्ट हो

(ii) लग्नेश व व्ययेश का स्थान विनिमय सम्बन्ध हो।

(iii) लग्नेश व सप्तमेश का क्षेत्र सम्बन्ध हो।

(iv) चन्द्र व शुक्र (स्त्री ग्रह) स्वराशि, मूल त्रिकोण राशि या उच्च राशि में हों

इन योगों में प्रेमिका से ही विवाह होता है या अपनी पसन्द की लड़की से विवाह होता है।

सप्तम में स्वक्षेत्री चन्द्रमा हो, केन्द्र में अशुभ ग्रह न हों।

दशम स्थान में शुभ ग्रह हो अथवा बुध हो और ग्यारवें में सूर्य एवं चन्द्रमा स्वोच्च राशि में हों

चन्द्रमा यदि मीन, कर्क, वृष, तुला राशि में हो और शुक्र से दृष्ट हो। लग्नेश व चन्द्रमा सप्तम स्थान में हों।

इन योगों में भी विवाह होता है

एक अन्य विवाहप्रद योग : P 98

यदि प्रश्न लग्न में चन्द्रमा तृतीय, पंचम, षष्ठ, सप्तम व एकादश में हो और सूर्य, बुध, गुरू से दृष्ट हो तो विवाहप्रद योग होता है। इसी प्रकार त्रिकोण या केन्द्र स्थानों में शुभ ग्रह स्थित हों (पाप ग्रह न हों) तो भी विवाह होता है

कुछ अन्य विशेष योग : P 99

(i) शुक्र व सप्तमेश प्रश्न लग्न से 3,6,10,11 भावों में हों

(ii) सम राशि में शुक्र, स्त्री राशि नवांश में चंद्रमा हों और ये लग्न को देखते हों तो शीघ्र विवाह होता है।

(iii) लग्न में सम राशि का दृष्टकोण हो और नवांश भी सम राशि का ही हो तब 6,8 में चंद्रमा होने पर भी स्त्री लाभ होता है

(iv) सप्तम या द्वितीय में शुक्र व चन्द्रमा हों, सप्तम में गुरू, बुध, शुक्र हों अथवा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो इन तीनों योगों में विवाह होता है

(v) 1,5,7,8,9 भावों में अधिपति इन भावों में हों या दृष्टि रखते हों तो विवाह शीघ्र होता है

<u>उक्त प्रकार से विवाह योग का निश्चय होने पर विवाह का समय जानने के लिए</u>

(i) चन्द्रमा अपनी अधिष्ठित राशि की द्वादशांश राशि से 5,9 राशि में गोचर करेगा तब विवाह होगा

(ii) बली योग कारक ग्रह से जब अन्य स्त्री कारक ग्रह (शुक्र, चन्द्रमा, सप्तमेश या बृहस्पति) योग करेगा अथवा इत्थसाल करेगा अथवा जन्म राशि से उपचय भाव, केन्द्र, त्रिकोण या द्वितीय भाव में जाएगी तब विवाह होगा

(iii) विवाह योग कारक ग्रहों पर पाप प्रभाव होने पर स्त्री मध्यम या कुरूप एवं शुभ प्रभाव होने पर सुन्दर होती है।

प्रश्न ज्ञान

विवाह विचार : P 59

सप्तम या उपचय स्थान में चन्द्र को गुरू देखता है तो स्त्री लाभ कराता है। यदि वह पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो स्त्रीनाश करता है। लग्न से 3,5,7,6,11वें स्थान में बैठे हुए चन्द्रमा के गुरू, सूर्य एवं बुध देखते हों तो विवाह होता है। केन्द्र एवं त्रिकोण स्थान में शुभ ग्रह हों तो विवाह होता है। यदि सप्तम के स्थान में शुभ ग्रह की राशि हो तो ग्रह की जाति की स्त्री मिलती है और इस स्थान में पाप ग्रह की राशि हो तो रूपहीन स्त्री मिलती है।

लग्न से सप्तम या उपचय (3,6,10 एवं 11वें स्थान) में चन्द्रमा स्थित हो तो और उसे गुरू देखता हो तो प्रश्न कर्ता का विवाह होता है। यदि उक्त स्थानों में स्थित चन्द्रमा को पाप ग्रह देखते हों तो विवाहिता स्त्री का भी नाश होता है और विवाह का प्रश्न होने पर विवाह नहीं होता। वासवानन्द एवं रामदयालु ने इस योग का विवेचन करते हुए उक्त भावों में द्वितीय भाव और जोड़ दिया है। उनका मत है कि – यदि प्रश्न लग्न में 2,3,6,7,1, या 11वें स्थान में स्थित चन्द्रमा को गुरू देखता हो तो स्त्रीलाभ (विवाह) होता है।

उक्त योग कारक चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो विवाह नहीं होता।

विवाह के अन्य योग : P 60

यदि प्रश्न लग्न से 3,5,7,6, या 11वें स्थान में चन्द्रमा हो और वह गुरू, सूर्य एवं शुक्र से दृष्ट हो तो विवाह होता है। इसी प्रकार प्रश्न लग्न से केन्द्र (1,4,6 एवं 10वां स्थान) एवं त्रिकोण (5 और 9वां स्थान) में शुभ ग्रह हों तो विवाह होता है। इन दोनों योगों का उल्लेख पृथुयशा एवं श्रीपति ने भी किया है

शीघ्र विवाह होने के योग : P 61

(i) लग्न से सम स्थान में शनैश्चर हो तो लड़के का शीघ्र विवाह होता है।
(ii) लग्न से विषम स्थान में शनैश्चर हो तो कन्या का शीघ्र विवाह होता है।
(iii) तृतीय, षष्ट एवं सप्तम स्थान में स्थित चन्द्रमा पर बुध, गुरू एवं सूर्य की दृष्टि हो।
(iv) द्वितीय स्थान में बैठा चन्द्रमा शुक्र से दृष्ट हो।
(v) लग्न या सप्तम में स्थित चन्द्रमा का शुक्र से इत्थसाल हो तो लड़के का विवाह होता है
(vi) तृतीय, सप्तम, नवम या दशम में बैठा शुक्र चन्द्रमा से दृष्ट हो तो पुरूष का शीघ्र विवाह होता है।
(vii) लग्नेश, सप्तमेश और चन्द्रमा का इत्थसाल हो तो सध : विवाह होता है।
(viii) लग्नेश, सप्तमेश और चन्द्रमा का शुक्र के साथ कम्बूल योग हो

विवाह न होने के योग

(i) प्रश्न लग्न से सप्तम स्थान में राहु हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों
(ii) केन्द्र, त्रिकोण या अष्टम स्थान में चन्द्रमा और पाप ग्रह हों
(iii) सप्तमेश अष्टम स्थान में पाप ग्रहों से दृष्ट हो
(iv) लग्न और सप्तम भाव में पाप ग्रह हों
(v) लग्नेश, सप्तमेश या चन्द्रमा का पाप/शत्रु ग्रह से इत्थसाल हो

(vi) सप्तमेश अष्टम में और अष्टमेश सप्तम में हो।

दाम्पत्य सम्बन्ध विचार : P 62

(i) चन्द्र और शुक्र पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो दाम्पत्य सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते

(ii) चन्द्र और सप्तमेश शुभ ग्रहों से दृष्ट/युक्त हो तो दाम्पत्य सम्बन्ध स्नेहपूर्ण रहते हैं।

(iii) लग्नेश और सप्तमेश में इत्थसाल योग हो तो स्त्री पुरूष में परम प्रेम होता है।

(iv) लग्नेश और सप्तमेश दोनों शुभ ग्रह हों और इनका चन्द्रमा के साथ कम्बूल योग हो तो दम्पत्ति में परम स्नेह रहता है।

(v) सप्तमेश लग्न में स्थित हो तो स्त्री पति की आज्ञाकारिणी होती है। लग्नेश सप्तम स्थान में हो तो। लग्नेश सप्तम स्थान में हो तो पुरूष स्त्री की हर इच्छा का पालन करने वाला होता है।

(vi) लग्नेश लग्न में और सप्तमेश सप्तम में हो तो पति पत्नि में अटूट प्रेम होता है।

(vii) सप्तमेश या शुक्र त्रिक स्थान में पाप ग्रहों से युक्त। दृष्ट हो तो दाम्पत्य सम्बन्ध अच्छे नहीं रहते।

(viii) सप्तमेश एवं षष्टेश में इत्थसाल हो तो पति पत्नि में मतभेद रहता है।

(ix) सप्तमेश और अष्टमेश दोनों 12वें स्थान में हो तो दम्पति तलाक ले लेते हैं

(x) षष्टेश और सप्तमेश एक दूसरे के स्थान में हों और इन्हें पापग्रह देखते हों तो पति/पत्नि तलाक ले लेते हैं।